प्रो. अखिलेश कुमार पाण्डेय
कुलपति
Prof. Akhilesh Kumar Pandey
Vice Chancellor

विक्रम विश्वविद्यालय
नैक द्वारा 'ए' ग्रेड प्रदत्त
उज्जैन (म.प्र.) 456010 भारत
दूरभाष : 0734-2514270 (कार्यालय)
: 0734-2511673 (निवास)
फेक्स : 0734-2514276

VIKRAM UNIVERSITY
Accredited 'A' Grade by NAAC
Ujjain - 456010 (M.P.) India
Phone : 0734-2514270 (Off.)
: 0734-2511673 (Res.)
Fax : 0734-2514276
E-mail : vcvikramujn@gmail.com
Website : www.vikramuniv.ac.in

क्रमांक : 183 / कुल. का. / 2021
दिनांक : 02.09.2021

प्रिय शिक्षकवृंद,

ज्ञानदान के लिए समर्पित एवं शिक्षा कर्म को अपने जीवन का लक्ष्य मानने वाले शिक्षकों के विशेष दिवस 'शिक्षक दिवस' पर आप सहित संस्था के समस्त शिक्षकों को हार्दिक बधाइयाँ एवं मंगलकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

भारत को सदियों से विश्वगुरु की प्रतिष्ठा मिली है। अनादि काल से अब तक पारम्परिक एवं अधुनातन ज्ञानविज्ञान की परम्परा का निर्वाह हमारा देश कर रहा है। मानव के सर्वांगीण विकास में शिक्षा की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। हमारे समग्र व्यक्तित्व का निर्माण शिक्षा ही करती है। महान् दार्शनिक श्रद्धेय डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन् ने शिक्षा को सर्वोपरि स्थान दिया था। वे स्वयं के शिक्षक होने के गौरव का अनुभव करते थे। इसीलिये उन्होंने अपने जन्मदिवस को सम्पूर्ण शिक्षक समुदाय के प्रति श्रद्धा व्यक्त करने के दिवस के रूप में अर्पित किया। शिक्षा सही अर्थों में हमारे व्यक्तित्व के रूपांतरण में महत्वपूर्ण साधन है।

प्रसन्नता की बात है कि मध्यप्रदेश ने गुणवत्तायुक्त शिक्षा के विकास के लिए व्यापक कदम उठाए हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को लागू करने में मध्यप्रदेश पहला राज्य बन गया है। ऐसे में हम सबका दायित्व है कि शिक्षा से जुड़े सभी पक्ष एकजुट होकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के क्रियान्वयन के लिये समग्र प्रयास करें। कोविड 19 संकट के दौर में उच्च शिक्षा और अनुसंधान के केन्द्रों में नया उत्साह, नई ऊर्जा जाग्रत करना आवश्यक है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उभरे नए मानदण्डों को साकार करते हुए इस दिशा में सफलता प्राप्त की जा सकती है और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लक्ष्यों को हासिल किया जा सकता है।

उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान के क्षेत्र में गुणात्मक विकास की दिशा में व्यापक प्रयास किए जा रहे हैं। जरूरी है कि मानव संसाधन विकास को दृष्टिगत रखते हुए उच्च शिक्षा परिसरों से जुड़े सभी पक्ष व्यापक योगदान देने के लिये तत्पर हों। नवीन परिवेश में कक्षा अध्यापन निरंतर एवं सुचारु रूप से हो। समस्त शिक्षक पूर्ण निष्ठा और समर्पण के साथ नई पीढ़ी के निर्माण के संकल्प को साकार करें।

किसी भी शैक्षणिक संस्था में अद्यतन पाठ्य सामग्री से सम्पन्न पुस्तकालय महत्वपूर्ण आधार होते हैं। वहाँ पाठ्यपुस्तकों के साथ ही पर्याप्त संदर्भ–ग्रन्थ एवं पत्र–पत्रिकाएं उपलब्ध हों।

निरंतर...2

कोविड 19 के लिए जारी दिशा निर्देशों का पालन करते हुए विद्यार्थीगण अपनी संस्था, ग्रन्थालय एवं वाचनालय में ज्ञानार्जन करें, जिससे उनके अन्य स्थानों पर अध्ययन के लिए जाने की प्रवृत्ति पर रोक लगाई जा सकेगी।

विद्यार्थियों को शैक्षिकेतर गतिविधियों में अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा को विकसित करने के पर्याप्त मौके उपलब्ध कराए जाएं। खास तौर पर उन्हें सामाजिक जिम्मेदारी के साथ विविधायामी गतिविधियों से जोड़ने की कोशिश हो, जिसका लाभ समग्र समाज और राष्ट्र निर्माण में प्राप्त हो सकेगा। स्वाधीनता के अमृत महोत्सव को मनाते हुए छात्रों में राष्ट्रहित सर्वोपरि की भावना जागृत करना हमारा लक्ष्य बने, यह जरूरी है। हमारे छात्र सही अर्थों में सम्यक् विकास की संकल्पना को साकार करने के लिए सहभागी सिद्ध हो सकते हैं।

शिक्षकगण स्वयं तो अभिप्रेरित हों ही, छात्रों को भी निरंतर अभिप्रेरित करें। वे विद्यार्थियों के सम्पूर्ण विकास में अपनी विलक्षण भूमिका निभा सकते हैं। शैक्षिक परिसरों में आज शिक्षक–अभिभावक–विद्यार्थी सम्बन्ध को सुदृढ़ करते हुए उनके बीच निरन्तर संवाद का वातावरण बनाने की आवश्यकता है, इससे प्रतिभाओं को सही दिशा दी जा सकेगी। वर्तमान सत्र के लिए मध्यप्रदेश शासन द्वारा घोषित अकादमिक कैलेन्डर के अनुरूप समस्त अकादमिक तथा परीक्षा संबंधी कार्य सफलतापूर्वक सम्पन्न किये जाने के लिये हम संकल्पित हैं। इस हेतु आप सभी का सार्थक सहयोग आवश्यक है।

वर्तमान में विक्रम विश्वविद्यालय द्वारा 135 से अधिक नवीन पाठ्यक्रम प्रारंभ किए है, जिनमें रोजगारोन्मुखी दृष्टि को ध्यान में रखा गया है। शिक्षा की प्रासंगिकता तभी है, जब वह संस्कारशील बनाए। साथ ही व्यक्ति को जीवन में सफल और आत्मनिर्भर बनाने में योगदान दे। शिक्षा की सार्थकता विद्यार्थी को सब प्रकार के भेदभाव और बंधनो से ऊपर उठा कर राष्ट्र के सर्वांगीण विकास में योगदान देने में है। श्रेष्ठ मूल्यों का आचरण करके ही हम नई पीढ़ी को आदर्श मूल्यों की शिक्षा दे सकते हैं।

वर्तमान विश्व में भारत को विश्वगुरु बनाने के लिए प्रौद्योगिकीय उन्नति और तेजी से बढ़ती स्पर्धा के बीच सर्वागीण प्रयत्न करने होगे। अध्ययन–अध्यापन और शोध में अधुनातन तकनीक का कारगर उपयोग करने में हमें तत्पर होना होगा। मेरा आग्रह है कि हम अपने शैक्षिक परिसरों में नवीनतम सूचना प्रौद्योगिकी का समुचित लाभ लेने के लिये वातावरण बनाएँ।

आप सभी के सहयोग से नये शैक्षिक परिवेश में विद्यार्थियों को ज्ञान सम्पन्न, विनयी और आत्मनिर्भर बनाकर हम श्रेष्ठ मनुष्य तैयार कर सकेंगे, ऐसा विश्वास है। आदर्श विद्यार्थियों के माध्यम से समाज और राष्ट्र के रचनात्मक वातावरण बन सकेगा।

इन्हीं आशाओं और शुभकामनाओं के साथ,

भवदीय,

2/9/21

(प्रो. अखिलेश कुमार पाण्डेय)